

हिंदी काव्यसंग्रह

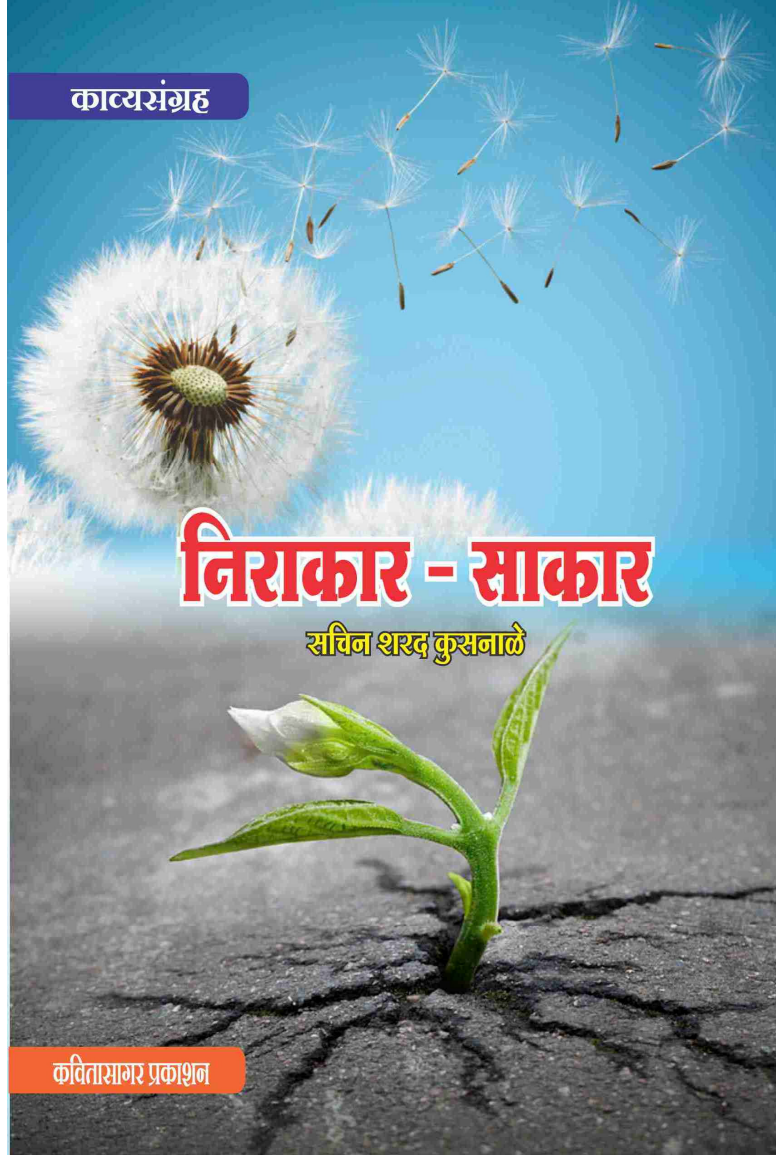
# निराकार - साकार

सचिन शरद कुसनाळे



कवितासागर प्रकाशन

02322 - 225500, 09975873569

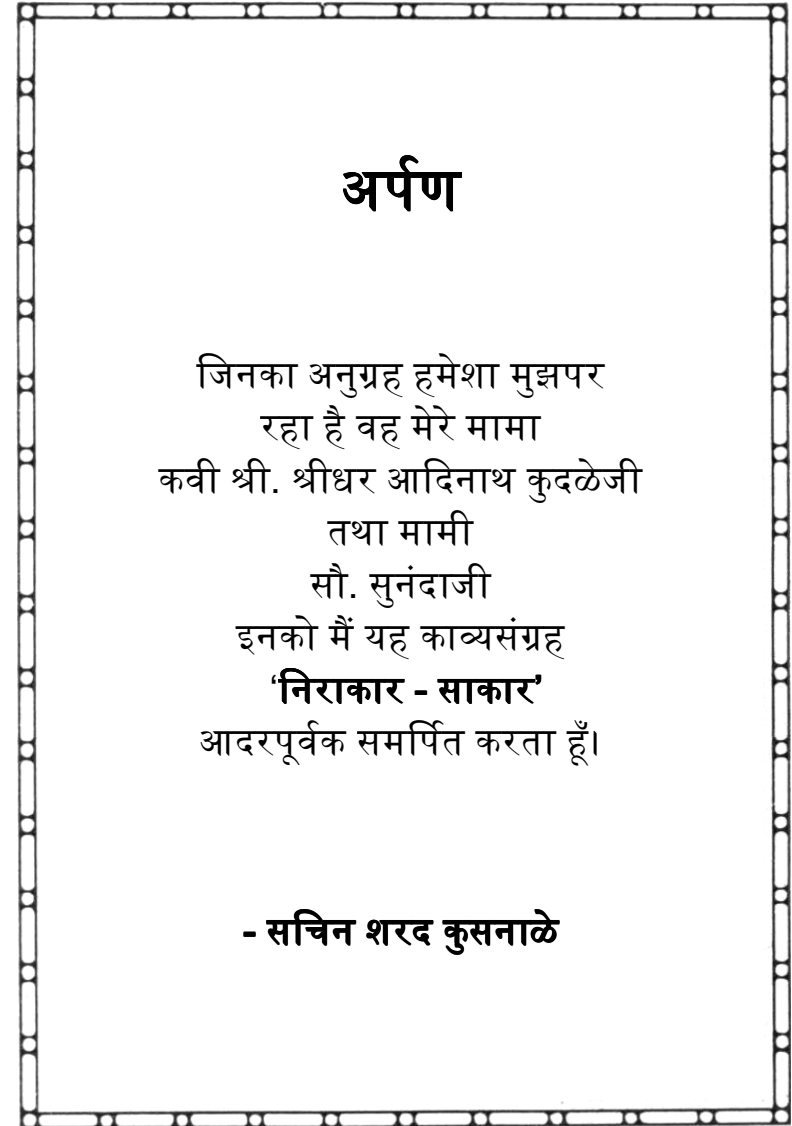


**KavitaSagar****कवितासागर**

Registered with the **International ISBN Agency, London, UK** and  
The Government of India, Ministry of Human Resource Development, New Delhi

- Title - **Nirakar - Sakar (निराकार - साकार)**
- Poet- **Sachin Sharad Kusanale (सचिन शरद कुसनाळे)**  
गाँव - म्हैसाळ, पिनकोड - ४१६४०९, तहसील - मिरज, जिला -  
सांगली (महाराष्ट्र) संपर्क: ०९४२११०५०४८, ०९८८१८४६३२९
- Year of Publication - **December 24, 2016 (दिसम्बर 24, 2016)**
- Edition's - **First (आवृत्ती पहली)**
- Volume - **One (खंड पहला)**
- Price - **Rs. 100/- (मूल्य 100 रुपये)**
- Subject - Collection of Poems (काव्यसंग्रह)
- Language - Hindi (हिंदी)
- Total **102 Pages** including covers.
- Copyright © Miss. Smita Sachin Kusanale (कु. स्मिता सचिन कुसनाळे)
- Published in India in 2016 by - **Dr. Sunil Patil (डॉ. सुनील पाटील)**  
Director - **KavitaSagar Publication (कवितासागर प्रकाशन)**
- Exclusively Marketed and Distributed by - **KavitaSagar Publication,**  
**Jaysingpur - 416101,** Taluka - Shirol, District - Kolhapur, Maharashtra, India  
**02322 - 225500, 09975873569, [sunildadapatil@gmail.com](mailto:sunildadapatil@gmail.com)**
- Typesetting by - **Dhudat Desktop Publishing Center**
- Cover Design by - **Shrikant Shinde (श्रीकांत शिंदे)**
- Printed and Bound in India by - **KavitaSagar Printing Services**

**Views expressed** in this book are **entirely** those of the respective **Authors** and do not represent the opinions or thoughts of the **Publisher.**



## ‘निराकार - साकार’ का अंतरंग

‘निराकार - साकार’ यह श्री. सचिन शरद कुसनाळेजी का दुसरा हिंदी काव्यसंग्रह है। शीर्षक के अनुसार इस काव्यसंग्रह में कवी ने अपने भावविश्व को संवेदनशीलता से उजागर किया है। प्रस्तुत काव्यसंग्रह में कुल ५६ छोटी - बड़ी कविताओं का समावेश किया है। हर कविता का विषय और आशय स्वतंत्र है। मनुष्य का भावविश्व दिन-ब-दिन समस्याओं से ग्रस्त होता जा रहा है। आज हर व्यक्ति आभासी दुनिया में जी रहा है। वह यथार्थता से अपने आपको स्वतंत्र रखने की कोशिश कर रहा है। परिणामस्वरूप वह स्वार्थी, लालची और आत्मकेंद्री होता जा रहा है। वह यंत्रवत जीवन जी रहा है। ऐसे हालात में उसे संवेदनशीलता से जोड़ने का काम इस काव्यसंग्रह की कविताएँ करती हैं।

‘निराकार-साकार’ का अर्थ है मनुष्य के कल्पनाविश्व में जो घटनाएँ घटित होती हैं, जो क्रियाकलाप जाग उठते हैं, ऐसी निराकार घटनाओं को शब्दों के माध्यम से आकार देना। अर्थात् जो महसूस होता है, उसे शब्दों में व्यक्त करना। इसके लिए तीव्र संवेदनशीलता की नितांत जरूरत होती है। यहीं संवेदनशीलता कवी सचिन कुसनाळे जी के नस-नस में भरी हुई है। जिसका प्रतिबिंब कविता के हर शब्द में दिखाई देता है। वास्तव में कविता समझने के लिए भी उतनीही संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है, जितनी कवी के पास होती है। क्योंकि कविता लिखना और समझ लेना दोनों बातें संवेदनशीलता से जुड़ी हुई हैं।

‘निराकार - साकार’ काव्यसंग्रह की अनेक विशेषताएँ दिखाई देती हैं। जैसे कम शब्दों में अधिक आशय सूचित होता है। कवीने मानो “गागर में सागर” भरने की पूरी कोशिश की है। जैसे ‘ईश्वर रूप’ कविता में कवी ने लिखा है -

भवसागर का जो किनारा है  
जनसागर का जो सहारा है  
वही ईश्वररूप है।  
त्रिकाल में जो तरता है  
त्रिलोक में जो सजता है  
वही ईश्वररूप है।

इन चंद शब्दों में निर्गुण, निराकार, सर्वव्यापी और सर्व साक्षी ईश्वररूप को शब्दबद्ध किया है। ठीक उसी प्रकार ‘अपराजित’ कविता में कवी ने मनुष्य को खुद की लड़ाई खुद लड़ने का और खुद से जितने का संदेश दिया है। कवी कहता है -

हम ही है  
हम को लूटानेवाले  
हम ही है  
हम को मिटानेवाले  
खुद से जीत जाओ  
फिर ना हार पाएँगे।

आजकल मनुष्य का जीवन आपाधापी और धोखाधड़ीसे भरा हुआ है। मनुष्य का हरपल भलीबुरी घटनाओं से घेरा हुआ है। इस बात को 'पल' कविता में सशक्तता से व्यक्त किया है।

एक पल भरोसा  
एक पल धोखा  
हर पल बेगाना।  
एक पल जीना  
एक पल मरना  
हर पल अधूरा।

मनुष्य का जीवन पानी के बुदबुदे के समान होता है। अतः जितनी जिंदगी मिली हुई है, उतनी खुशी से जी लेना चाहिए। 'अभी' कविता का संदेश यही है -

अभी आनंद - रसपान करो;  
खुब मजा तुम चख लो  
कहीं वक्त छूट न जाए।

अभी जो करना - कर लो;  
खुब ढंग से जी लो  
कहीं वक्त छूट न जाए।

जीवन में मिलन के साथ बिदाई आती ही रहती है। हमें बिदाई की घड़ी अर्थात् जुदाई का भी स्वागत करना चाहिए। 'जुदाई' कविता इस आशय से भरी हुई है -

हमारा सफर अब पूरा हुआ  
ईश्वर का मीठा वह प्रसाद रहा  
शुभकामनाओं के साथ तुम्हे बधाई  
मीठी ही रहे सदा हमारी जुदाई।

जीवन में आनेवाले उतार-चढ़ाव, सुख-दुःख, मान-अपमान, धूप-छाँव, खुशी और गम आदि सभी प्रकारके प्रसंगों से कवी गुजर रहा है। कवी की तरह हमें भी ऐसे विविध प्रसंगों से गुजरना पड़ता है। गुजरने की इस प्रक्रिया को सजगता से व्यक्त करने में कवी सफल रहा है। कवी को जो अनुभूती हुई है ठीक उसी प्रकार की अनुभूती पाठकों को होती है। यही इस काव्यसंग्रह की खुबी है। मुझे आशा है 'निःशब्द-शब्द' काव्यसंग्रह का स्वागत जितनी हमदर्दी से और आत्मियता से किया गया, उतनी हमदर्दी 'निराकार-साकार' काव्यसंग्रह के स्वागत में जरूर दिखाई जाए।

कवी श्री. सचिन कुसनाळे और प्रकाशक डॉ. सुनिल दादा पाटील दोनों को हार्दिक-हार्दिक बधाई।

प्रा. डॉ. भीमराव पाटील (हिंदी विभागाध्यक्ष)

डॉ. पतंगराव कदम महाविद्यालय, सांगली - ४१६४१६

मो. नं. ९४२११३३१७२

[dr.bhimraopatil@yahoo.com](mailto:dr.bhimraopatil@yahoo.com)

## अपनी बात

अपने विचार एवं संकल्पना को गिने-चुने शब्दों में सही ढंग से पेश करने के लिए कविता एक सशक्त माध्यम है। यद्यपि कोई भी कविता एक समय में एकही बात पेश करती है किंतु उचित प्रतिक्रिया एवं उम्मीदों को रखने का सही अवसर प्रदान करती है। संवेदनशीलता कविता के प्रकटन का मुख्य स्रोत है। शब्दों के सहायता से वह प्रकट की जाती है। भावनावश होकर सभी लोग अपने-अपने तरीके से अपनी भावनाएँ प्रकट करते हैं। लेकिन अगर भावनाओं को संयम और सूक्ष्मता से प्रस्तुत किए जाने का यत्न किया जाए तो कविता बन सकती है। जिंदगी में हम हर मोड़ पर कुछ पाठ पढ़ते हैं। कुछ बातें बेजुबान होती हैं। ऐसी बातों को प्रतिकात्मक तथा प्रातिनिधिक रूप से प्रकट करना पड़ता है। कविता इस तरह कवी के आचार, विचार, उम्मीदें, सपने, सुख, दुःख, कल्पना, अभिरुची आदी का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार एक वास्तविकता पेश करने का कविता यह एक सहज अंदाज है। जो अनुभव कवी के होते हैं, वे आम भी होते हैं। इसप्रकार कविता में कुछ तत्व रूप भी पेश होते हैं।

यहाँ एक बात जरूर रखना चाहता हूँ कि मैं एक किसान का बेटा हूँ। इसलिए मुझे बचपन से ही खेती से लगाव रहा है। जोताई किया हुआ खेत मेरे मन को भाता है। वह इसलिए कि जोतने से अनावश्यक चिजें हट जाती हैं, और आवश्यक पृष्ठभूमि बन जाती है। सुलझी हुई मिट्टी किसी भी बीज को पालने-पोसने में सक्षम होती है। मनचाहे बीज का रोपण उसमें किसान कर सकता

है। हमारी मनोभूमी भी अच्छे विचार एवं नवनिर्मिती के लिए हमेशा जोती हुई रहनी चाहिए। तभी उससे कुछ अच्छे नतीजें निकल सकते हैं।

अगर किसी काम को हम निरंतर करते हैं तो उसकी खूबी हमें हासिल होती है। अगर किसी काम की तालीम हम हासिल करे और उसे बार-बार दोहराया नहीं जाए तो उस काम में हमें पर्याप्त गति नहीं मिलती। यह बात काव्य एवं अन्य साहित्य विषय को भी लागू होती है। बीस साल के उम्र में जब मैं कॉलेज में पढ़ता था, तब पहली कविता लिखी। उसी दौरान २०-२५ कविताओं की रचना भी हो सकी। उसके बाद उसमें सिलसिला ना रख सका। कविता की रचना होने के लिए मन की बात तो सुननी ही पड़ती है। अनसुना कर देने से हमारी सुनने की आदत कम होती है। इसप्रकार कविता का प्रवाह भी घटने लगता है। कई बार वह सुख भी जाता है।

कोई स्वयंस्फूर्त विचार हमारे मन में कूदता है, तो उसका स्वागत करना चाहिए। उसको सजाना-सँवारना चाहिए। उसे उचित ढंगसे पेश करने की चाहत होनी चाहिए, तब बात बन जाती है। चालीस साल की उम्र में या लगभग बीस साल बाद मुझे फिरसे कविता लिखने की प्रेरणा मिली और मैं लिखता गया। मेरे बेटे सम्मोद और स्मिता उसी सरकारी स्कूल में पढ़ते थे, जहाँ मैं पढ़ाता था। बातों-बातों में मैंने उन्हें कह दिया कि मैंने भी बरसों पहले कुछ कविताएँ लिखी हैं। यह सुनकर उन्होंने सानंद आश्चर्य व्यक्त किया। आपने कविताएँ लिखना क्यों बंद किया? अब भी आप कविताएँ क्यों नहीं लिखते? उनके इन सवालों से मैं फिरसे

सोचने पर मजबूर हुआ। फिर मैंने कोशिश शुरू की और बात बनती गई। मैंने मेरा पहला कवितासंग्रह **‘निःशब्द-शब्द’** कवितासागर प्रकाशन, जयसिंगपुर की माध्यम से प्रकाशित किया।

देनेवाला देता है, लेकिन लेने की आदत तो होनी चाहिए। झोली लेकर खड़े होंगे तो उसमें थोड़ा-बहुत आ जाता है, देनेवाला दे देता है। अगर देनेवाला ना दे तो कहाँ से आए? अगर झोली भी ना फैलाई जाए तो कोई क्यों दें? हम तो एक माध्यम होते हैं। देने का सिलसिला बनाने वाली कोई प्रेरणा जरूर होती है, जो किसी माध्यम के रूप से देती रहती है। मुझे भी कुछ देने के लिए उस अमूर्त चेतना ने चुन लिया यह मेरा सौभाग्य है। निराकार-अव्यक्त का साकार रूप में पेश होना अनुपम होता है। ‘निराकार-साकार’ के रूप में यह साहित्य कृती सविनय पेश कर रहा हूँ। आशा है की आप इसका स्वागत करेंगे।

इस काव्यसंग्रह के निर्माण में हिंदी के विशेषज्ञ प्रा. डॉ. भीमराव पाटीलजीने मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। इसके साथ ही काव्यसंग्रह का यथार्थ रसग्रहण प्रस्तुत कर मुझे प्रेरित किया। इसलिए मैं उनका बहुत आभारी हूँ। कवितासागर प्रकाशन संस्थाके डॉ. सुनील दादा पाटीलजीने बड़ी तत्परता से अल्पावधिमें इस काव्यसंग्रह को बेहतरीन ढंग से प्रकाशित किया, इसलिए उनको भी मैं बहुत धन्यवाद देता हूँ। अन्य ज्ञात - अज्ञात सभी जो इस निर्माण में सहयोगी रहें, उन सभी का हार्दिक आभार।

**- कवी सचिन शरद कुसनाळे**

## काव्यानुक्रम

१. ईश्वररूप
२. बड़ी बात
३. अपराजित
४. विपरीत
५. वाल्या की पत्नी
६. पल
७. बेलूत्फ
८. संकेत
९. करनी
१०. ऐब
११. मतलब
१२. अगर-मगर
१३. मौसम
१४. मेरे
१५. औकात
१६. क्यों ना?
१७. सच सख्त

१८. मंज़िल
१९. बेगाना
२०. हमदम
२१. आप बिन
२२. अब
२३. हलचल
२४. टालो
२६. अनबन
२६. निआमत
२७. बेतूकी
२८. एक वह
२९. बात बनाओ
३०. विषम
३१. परिवर्तन
३२. मुस्कुरा दो
३३. वीरत्व
३४. पूरी-खरी
३५. बदफैल
३६. पेड़
३७. मना

३८. बचाते चलो
३९. नाक्राबिल
४०. अलग
४१. महावीर
४२. सलाम?
४३. तड़प.....
४४. नाकाम
४५. दुर्लभता
४६. अनमेल
४७. आम लोग
४८. अनोखा मेल
४९. अभी!
५०. तक्रदीर
५१. क्या-क्या
५२. माहौल
५३. कृतघ्न
५४. नापसंद
५५. मेहनत
५६. जुदाई

## १. ईश्वररूप

अनाथ के जो नाथ है,  
निराधार के जो आधार है  
वहीं ईश्वररूप है।

तूफान में जो दिया है,  
धूप में जो साया है  
वहीं ईश्वररूप है।

प्यास की जो बुझन है  
भूख की जो मिटन है  
वहीं ईश्वररूप है।

जिंदगी की जो साँस है,  
तन की जो चेतना है  
वहीं ईश्वररूप है।

सब का जो साथी है,  
सच का जो साक्षी है  
वहीं ईश्वररूप है।

पथिक की जो मंज़िल है,  
यात्रा की जो प्रेरणा है  
वहीं ईश्वररूप है।

भवसागर का जो किनारा है,  
जनसागर का जो सहारा है  
वहीं ईश्वररूप है।

गुण के जो राशी है,  
निर्गुण के जो वासी है,  
वहीं ईश्वररूप है।

भाव में जो निराकार है,  
आकार में जो साकार है,  
वहीं ईश्वररूप है।

त्रिकाल में जो तरता है,  
त्रिलोक में जो सजता है,  
वहीं ईश्वररूप है।

सेवकों के जो सेवक है,  
मालिकों के जो मालिक है,  
वहीं ईश्वररूप है।



## २. बड़ी बात

ना करने से क्या होता है  
 करने से सब बनता है

कर्म के पथ पर चल पड़ने से  
 कहानी बन खड़ी होती है

लगन के साथ मेहनत करने से  
 दास्ताँ बन सुनाई देती है

वक्तपर निकल पड़ोगे तो  
 समयपर वापस लौट आओगे

बूँद-बूँद से जमा करोगे तो  
 भरे-पूरे रह जाओगे

मुश्किलों में रुक जाओगे तो  
 आधा-अधूरा रहा पाओगे

लंबे सफर के फासले में  
 हौसले तुम्हारे बुलंद करो

कल करे सो आज कर  
 पल-पल को हासिल कर

छोटी जिंदगी की यह बड़ी बात  
 जमाना तुझे तब देगा साथ

## ३. अपराजित

खुद से जीत जाओ,  
 फिर ना हार पाएँगे।  
 हम ही है  
 हम को रोकनेवाले  
 हम ही है  
 हम को टोकनेवाले

खुद से जीत जाओ  
 फिर ना हार पाएँगे।  
 हम ही है  
 हम को कोसनेवाले  
 हम ही है  
 हम को खिंचनेवाले

खुद से जीत जाओ  
 फिर ना हार पाएँगे।  
 हम ही है  
 हम को बाँटनेवाले  
 हम ही है  
 हम को काँटनेवाले

खुद से जीत जाओ  
 फिर ना हार पाएँगे।  
 हम ही है  
 हम को लुटानेवाले  
 हम ही है  
 हम को मिटानेवाले

खुद से जीत जाओ  
 फिर ना हार पाएँगे।

## ४. विपरीत

यह बात कुछ हजम नहीं हुई.....  
 मुँह से राम कह गए  
 और बगल में छूरी छुपा दिए  
 सौ चूहे खा गए  
 और हज यात्रा पर चल दिए

यह बात कुछ हजम नहीं हुई.....  
 खुद चोरी कर गए  
 और कोतवाल को डाँट दे दिए  
 विपरीत नृत्य कर गए  
 और आँगन टेढ़ा कह दिए

यह बात कुछ हजम नहीं हुई.....  
 टाली तो बजा गए  
 और एक ही हाथ दिखा दिए  
 कौआ तो जान गए  
 और कोयल धून सुनाई दिए

यह बात कुछ हजम नहीं हुई.....  
 बीज कपास के बो गए  
 और धान काँटने चल दिए  
 खुद बाँझ रह गए  
 और प्रसवपिंडा कह दिए

यह बात कुछ हजम नहीं हुई।

## ५. वाल्या की पत्नी

वालया की पत्नी सच कहती थी....

तेरा है तुज संग  
मेरा भी मज संग  
कोई नहीं तेरा रे  
हर कोई अकेला रे

वालया की पत्नी सच कहती थी....

जो करोगे-सो भरोगे  
जो बोओगे-सो काटोगे  
बीच भँवर में सँभालो रे  
मीत ना आयो साथ रे

वालया की पत्नी सच कहती थी....

बेईमानी तुझपर छाया है  
झूठ तुझपर हावी है  
दुनिया को तुने लूटा रे  
खुद भी कंगाल-टुटा रे

वालया की पत्नी सच कहती थी....

मेहनत रंग लाती है  
पसीना सुकून देती है  
सब पाकर तू खाली रे  
गलत मंज़िल तुने पायी रे

वालया की पत्नी सच कहती थी....

नेकी सर उठाती है  
सच्चाई पावन बनाती है  
जिंदगी मिट्टी ना बना रे  
जीवन की बाजी ना हारे रे

वालया की पत्नी सच कहती थी....

कडवी घूँटी पिया करो  
जालीम दवा लिया करो  
लूटता है वह चोर रे  
शांती नहीं वह घोर रे

वालया की पत्नी सच कहती थी....

बिता वक्त, सच सख्त  
हाथ से छूटता, वह मिटता  
जो बचा वह सँभल रे  
नींद से आँख तू खोल रे

वालया की पत्नी सच कहती थी....

झूठे सपने, मिटते परवाने  
दुनिया से छिनते, पाप परोसे  
व्यर्थ खून-पसिना चुसा रे  
समशान से सच्चाई सिखो रे

वाल्या की पत्नी सच कहती थी....  
 भरी झोली, खाली हाथ  
 कुछ ना आए, तेरे साथ  
 एक बात तुझको काफी रे  
 तू तो मुसाफिर अकेला रे।

## ६. पल

एक पल खट्टा  
 एक पल मिठा  
 हर पल अनूठा।

एक पल भला  
 एक पल बूरा  
 हर पल बदलता।

एक पल कहता  
 एक पल सुनता  
 हर पल बहता।

एक पल सुख  
 एक पल दुःख  
 हर पल ढलता।

एक पल हँसाता  
 एक पल रुलाता  
 हर पल उलझाता।

एक पल बनाता  
एक पल बिघाड़ता  
हर पल पढ़ाता।

एक पल अपना  
एक पल पराया  
हर पल भरमाता।

एक पल हार  
एक पल जीत  
हर पल धुँधलाता।

एक पल भरोसा  
एक पल धोखा  
हर पल बेगाना।

एक पल जीना  
एक पल मरना  
हर पल अधूरा।

## ७. बेलुत्फ

सब कुछ शून्य है,  
जब कोई सोच नहीं।

सब काम व्यर्थ है,  
जब कोई विवेक नहीं।

सब बातें निरस्त हैं  
जब कोई काम नहीं।

सब जोड़ा टुटा है,  
जब कोई मेल नहीं।

सब नाम बदनाम हैं  
जब कोई निती नहीं।

सब ईन्सान हैवान हैं  
जब कोई इन्साफ नहीं।

सब जीवन व्यर्थ है  
जब कोई होश नहीं।

## ८. संकेत

यह तो बस संकेत है।  
आग नहीं,  
चिंगारी जली है  
तूफान नहीं,  
हवाएँ चली है

यह तो बस संकेत है।  
भूकंप नहीं,  
हलचल हुई है  
बिजली नहीं  
रोशनी गिरी है

यह तो बस संकेत है।  
आसमाँ नहीं  
सब्र टूटा है  
धीरज नहीं  
पसीना छूटा है

यह तो बस संकेत है।  
नींद नहीं  
सपना मिटा है  
मंज़िल नहीं  
इरादा हटा है

यह तो बस संकेत है।

## ९. करनी

सिर्फ कथनी से क्या होता है?  
करनी का उसे साथ हो।

सिर्फ साधन से क्या होता है?  
हाथ भी उसके साथ हो।

सिर्फ सपनों से क्या होता है?  
वास्तव से उसका मेल हो।

सिर्फ ज्ञान से क्या होता है?  
काम पे तुम्हारा ध्यान हो।

सिर्फ हमदर्दी से क्या होता है?  
सहारा तुम बन जाओ।

सिर्फ प्रशंसा से क्या होता है?  
साक्षात उसका आचरण हो।

सिर्फ निकटता से क्या होता है?  
दिल से तुम अपना लो।

## १०. ऐब

अगर दिल का मामला हो,  
तो दिमाग का खयाल कहाँ?

अगर स्वाद का मामला हो,  
तो स्वास्थ्य का खयाल कहाँ?

अगर ज़िद का मामला हो,  
तो समझने का खयाल कहाँ?

अगर स्वार्थ का मामला हो,  
तो विवेक का खयाल कहाँ?

अगर शेखी का मामला हो,  
तो सादगी का खयाल कहाँ?

अगर बड़प्पन का मामला हो,  
तो बातों का खयाल कहाँ?

अगर अपनों का मामला हो,  
तो गैरों का खयाल कहाँ?

अगर गगन का मामला हो,  
तो जमिन का खयाल कहाँ?

अगर जीने का मामला हो,  
तो मौत का खयाल कहाँ?

## ११. मतलब

हम तुम्हारे हैं, तुम हमारे हो।  
जब तक मेरा भला हो  
तब तक तेरा भला हो  
जब तक बाँट खाना है  
तब तक मिली भगत है

हम तुम्हारे हैं, तुम हमारे हो।  
जब तक मंज़िल हमारी एक है  
तब तक रास्ते, हमारे तय हैं  
जब तक बात से बात मिलती है  
तब तक गुहार हमारी एक है

हम तुम्हारे हैं, तुम हमारे हो।  
जब तक खाना हजम हो  
तब तक सब मिठास हो  
जब तक तेरी शान है  
तब तक मेरा सलाम है

हम तुम्हारे हैं, तुम हमारे हो।  
अगर तुम ना बने किस काम के  
तो इस्तेमाल के बाद फेंकना है  
तब बिती बातें भूलाकर  
रात गई, बात गई कहना है

## १२. अगर - मगर

क्योंकि, हमारी ही बात सही होती है।  
 अगर ठीक हुआ तो मैंने ही किया  
 मगर बिघड़ गया तो तुने ही किया  
 अगर मुनाफा हुआ तो मैंने ही किया  
 मगर घाटा हुआ तो तुने ही किया

क्योंकि, हमारी ही बात सही होती है।  
 अगर मेरा मानते तो भला होता।  
 मगर तुझसा करने से बुरा हुआ  
 अगर मेरा पैर फिसला तो जमिन टेढ़ी  
 मगर तेरा पैर फिसला तो औकात नहीं

क्योंकि, हमारी ही बात सही होती है।  
 अगर मेरा मानोगे तो तुम भले  
 मगर मनमानी करोगे तो तुम बुरे  
 अगर मैंने कहा तो सच बराबर  
 मगर तूने कहा तो झूठा कहीं का

क्योंकि, हमारी ही बात सही होती है।  
 अगर मैंने किया तो ताड़मात्र  
 मगर तूने किया तो तिलमात्र  
 अगर मैंने सहा तो पर्वत बराबर  
 मगर तूने सहा तो दाल बराबर

क्योंकि, हमारी ही बात सही होती है।  
 अगर सूरज उगे तो मेरे पुण्य से  
 मगर सूरज डुबे तो तेरे पाप से  
 अगर बारिश हुई तो मेरे सत्कर्म से  
 मगर अकाल पड़ा तो तेरे दुष्कर्म से

क्योंकि, हमारी ही बात सही होती है।



## १३. मौसम

देखो, अब मौसम बदल गया।

रुखा-सुखा सब चला गया  
दर्द-दुःख अब दूर हुआ  
डर-चिंता सब मिट गए  
सोच-विचार अब खिल गए

देखो, अब मौसम बदल गया।

बुरा वक्त सब बित गया  
भला पल अब आ गया  
बिघड़ा कल सब ठीक हुआ  
बिछड़ा ख्वाब अब मिल गया

देखो, अब मौसम बदल गया।

डुबने की सब बात नहीं  
तरने की अब बात सही  
छिन्न की सब नौबत नहीं  
हँसने की अब बात सही

देखो, अब मौसम बदल गया।

अंधेरा सब हट गया  
उजाला अब फैल रहा  
निराशा सब दूर हुई  
आशा अब पास आई

देखो, अब मौसम बदल गया।

## १४. मेरे

मेरे हमदम, दिल के दिवाने  
तुझसे तो पूरे हुए सपनें

मेरे अपने, मन के बसेरे  
तुझसे तो रोशन हुए जमानें

मेरी हसरते, दिल की मुरादें  
तुझसे तो पाए सब इरादें

मेरे आँसू, मेरी शक्ती  
तुझसे तो जागी भावभक्ती

मेरे प्यारे, पागल दिवाने  
तुझसे तो छनके अमृत बातें

मेरे अनमोल, आँख के तारे  
तुझसे तो किस्मत के द्वार खुले

मेरे सब कुछ, जग में अकेले  
तुझसे तो मुझे जन्नत मिले

## १५. औक्रात

औक्रात इतनी बढ़ गई है की  
 रिश्ते-नाते तोड़ दिए  
 प्यार मोहब्बत भूल दिए  
 हँसी-खुशी कत्ल किए  
 अच्छे-भले त्याग दिए

औक्रात इतनी बढ़ गई है की  
 आँख पे पट्टी बाँध लिए  
 टूटे पैर से दौड़ दिए  
 बेपर्वा ज़िंदगी जी लिए  
 फिसली जुबान बरस दिए

औक्रात इतनी बढ़ गई है की  
 दुनिया से मूँह मोड़ लिए  
 हकीकत अनदेखा कर दिए  
 दूसरों को नीचा दिखा दिए  
 अपने को उँचा बना लिए

औक्रात इतनी बढ़ गई है की  
 खुद ही खुदा बन गए  
 तकदीर की रेखा खिंच दिए

मनचाहे बात बना लिए  
 वरदान का हक भी पा लिए

औक्रात इतनी बढ़ गई है की  
 क्षमता से जादा बढ़ गए  
 औरोंकी गहराई नाप लिए  
 नीचे खुद गिर गए  
 लेकिन नाक उपर कह दिए।

## १६. क्यूँ ना

क्यूँ ना अब जिया जाए  
अपने जीवन को सँवारा जाए।

क्यूँ ना अब गाना गाए  
अपने दिल को बहलाया जाए।

क्यूँ ना अब घूँम-फिर आए  
अपने मन को संतोष हो जाए।

क्यूँ ना अब आगे बढ़ जाए  
अपने पथ को प्रशस्त किया जाए।

क्यूँ ना अब मिलकर रहा जाए  
अपने आप को पहचान दिया जाए।

क्यूँ ना अब उम्मीदें बढ़ाये जाए  
अपने सपने सजाए जाए।

क्यूँ ना अब अपनी बात कही जाए  
अपने आपको सुनाया जाए।

क्यूँ ना अब अपना चाँद हासिल करें  
अपने गगन को छू लिया जाए।

## १७ सच सख्त

सच ना मानोगे  
तो परिणाम भुगतोगे।

सच ना देखोगे  
तो वास्तव पहचानोगे।

सच ना सुनोगे  
तो हालात समझोगे।

सच ना अपनाओगे  
तो सबक सिखोगे।

सच ना झेलोगे  
तो ठोकर सहोगे।

सच ना कहोगे  
तो अतित दिखाओगे।

सच ना समझोगे  
तो भ्रमित रहोगे।

सच ना जियोगे  
तो धोखा खाओगे।

## १८. मंज़िल

..... तुम तो मंज़िल हो।  
ना तेरा कोई अपना  
ना तेरा कोई पराया,  
तुम तो उसी की हो  
जो अपना बनाता है

..... तुम तो मंज़िल हो।  
ना तुझे कोई रहम  
ना तुझे कोई नफरत,  
तुम तो उसीकी हो  
जो सँभल पाता है

..... तुम तो मंज़िल हो।  
ना तेरा कोई इमान  
ना तेरा कोई मजहब,  
तुम तो उसी की हो  
जो काबिल रहता है

..... तुम तो मंज़िल हो।  
ना तेरा कोई मकसद  
ना तेरा कोई अरमान,  
तुम तो उसी की हो  
जो न्योछावर करता है

..... तुम तो मंज़िल हो।  
ना तेरा कोई भूत  
ना तेरा कोई भविष्य,  
तुम तो उसी की हो  
जो वर्तमान जीता है

..... तुम तो मंज़िल हो।  
ना तेरा कोई हमराही  
ना तेरा कोई हमजोली,  
तुम तो उसीकी हो  
जो सिर्फ तुम्हारा है

..... तुम तो मंज़िल हो।  
ना तेरा कोई जनन  
ना तेरा कोई मरण,  
तुम तो उसीकी हो  
जो ताज पहनता है

..... तुम तो मंज़िल हो।

## १९. बेगाना

बुरा वक्त गुजर गया  
किया वादा निभा लिया  
निराशा तो सब दूर हुई  
खोई दुनिया तो मिल गई

मेरा क्या है वास्ता तब.....  
मैं तो पराया हुआ अब.....

तूफान अब बित गया  
किनारा अब मिल गया  
मंज़िले सब मिल गई  
मन्नतें तो पूरी हुई

मैं किस काम का तब....  
मैं तो बेगाना हुआ अब....

जो बिघडा बन गया  
आसमाँ भी मिल गया  
उलझी ज़िंदगी सुलझ गई  
मँझधार से नौका पार हुई

मैं ना हमसफर तब....  
मैं तो एक अनजाना अब....

## २०. हमदम

यह जरूरी नहीं की,  
तुम हमारे साथ हो  
लेकिन बात बनती रहे।

यह जरूरी नहीं की,  
तुम हमारे अपने हो  
लेकिन अपनापन बनता रहे।

यह जरूरी नहीं की,  
तुम हमारे पास हो  
लेकिन नजदीकी बढ़ती रहे।

यह जरूरी नहीं की,  
तुम हमारे राही हो  
लेकिन मंज़िलें मिलती रहे।

यह जरूरी नहीं की,  
तुम हमारे साया हो  
लेकिन अंदाज बनते रहे।

## २१. आप बिन....

भीड़ बहुत है  
मेले सजे है  
आप बिन तो  
रिश्ते अधूरे हैं।

भूख मिटती है  
प्यास बुझती है  
आप बिन तो  
मिठास अधूरी है।

आसमाँ देखते है  
सपने सजाते है  
आप बिन तो  
खवाँब अधूरे है।

चाँद-तारे है  
पवन-गगन है  
आप बिन तो  
जन्नत अधूरे है।

शान-शौकत है  
ढेरो दौलत है  
आप बिन तो  
खज़ाने अधूरे है।

खूब बातें है  
बहुत रातें है  
आप बिन तो  
कहानी अधूरी है।

धूम मची है  
रंग जमे है  
आप बिन तो  
शृंगार अधूरे है।

पूजा भाव है  
वंदन चाहते है  
आप बिन तो  
देवता अधूरे हैं।

## २२. अब

तुम बिन मेरा कोई नहीं  
 अब, तुम तो मेरे कोई नहीं  
 तुम तो मेरे सब कुछ हो  
 अब, हम आप के है कौन?  
 दिल नहीं जान हो तुम  
 अब, पास की भी गुंजाईश नहीं  
 मौत भी हसीन जिंदगी है  
 अब, जिंदगी से मौत बेहतर हुई  
 परायों को अपना कर गए  
 अब, अपनों को पराया कर दिए  
 संग को स्वर्ग कहते थे  
 अब, संपर्क को नरक कह दिए  
 दुनिया को सलाम करते थे  
 अब, दुनियादारी भी भूल गए  
 जमीन की उँचाई ढूँढते थे  
 अब, गहरी खाई में फिसल गए  
 जमाना अपना कहते थे  
 अब, दास्ताँ बनाकर सुनाते हो  
 बातों को कहते-सुनते थे  
 अब, सब को खामोश कर दिए

## २३. हल - चल

हवा चलती है,  
 ताज़गी देती है।  
 पानी बहता है,  
 साथ लेता है।  
 सूरज उगता है,  
 साफ दिखता है।  
 वक्त बदलता है,  
 सबक मिलता है।  
 उम्र बढ़ती है,  
 जिंदगी घटती है।  
 ऋतु आती है,  
 परिवर्तन लाती है।  
 शाम होती है,  
 ठहराव देती है।  
 बीज बोते हैं,  
 फल पाते हैं।  
 हाथ मिलाते हैं,  
 साथ निभाते हैं।  
 मूँह फेरते हैं,  
 त्याग देते हैं।  
 पहचान होती है,  
 सहवास बढ़ता है।  
 जान लेते हैं,  
 समझ बढ़ाते हैं।

## २४. टालो

जुबान को लगाम लगाया जाए  
इच्छाओं को सीमित किया जाए  
क्रोध काबू में रखा जाए  
घमंड को हटा दिया जाए  
..... तो बहुत अनर्थ टल जाए।

गती पे नियंत्रण रखा जाए।  
मन पे अंकुश लगाया जाए  
खरीद पे काबू किया जाए  
ऊर्जा को नियमित किया जाए  
..... तो बहुत अनर्थ टल जाए।

नीव पक्की डाली जाए  
समयपर काम किया जाए  
वक्तपर इलाज पाया जाए  
उचित न्याय दिया जाए  
..... तो बहुत अनर्थ टल जाए।

अपनी औकात जान जाए  
उचित समय पर चुप रहे  
अनुरूप सम्मान दिया जाए  
सही मौके पर बोला जाए  
..... तो बहुत अनर्थ टल जाए।

## २५. अनबन

अच्छी बातें करते हैं  
अपनापन दिखाते हैं  
राजीखुशी रहते हैं  
मिलजुलकर बढ़ते हैं  
लेकिन हकीकत कुछ और है।

हाथ से हाथ मिलाते हैं,  
खासा अभिवादन देते हैं  
आव-भगत करते हैं,  
एकत्व का दर्शन कराते हैं  
लेकिन हकीकत कुछ और है।

बड़े बोल बोलते हैं  
थाँट-बाँट दिखाते हैं  
निर्णय का मेल बिठाते हैं  
एक सूर में गाते हैं  
लेकिन हकीकत कुछ और है।

बड़ी आमदनी करते हैं  
खुशहाली में जीते हैं  
ढंग से चलते रहते हैं,  
दर्द पर मरहम लगाते हैं  
लेकिन हकीकत कुछ और है।



काम में हाथ बँटाते है  
 ख्याली-खुशहाली पूछते है  
 कामयाबी छू लेते है  
 सम्मान को पा लेते है  
 लेकिन हकीकत कुछ और है।

## २६. निआमत

देखो, अब सब सुधर गए हैं।  
 अपने धुन में मस्त हुए है  
 अपनी बात कह रहे है  
 अपनी सोच जी रहे है

देखो, अब सब सुधर गए हैं।  
 अपना भविष्य देख रहे है  
 अपना काम कर रहे है  
 अपने आपको सँभल रहे है

देखो, अब सब सुधर गए हैं।  
 अपना स्वर्ग खोज रहे है  
 अपनी साधना कर रहे है  
 अपना भला देख रहे है

देखो, अब सब सुधर गए हैं।  
 अपने रिश्ते बना रहे है  
 अपने रास्ते चुन रहे है  
 अपने सपने सजा रहे है

देखो, अब सब सुधर गए हैं।  
 अपनी मौज कर रहे है  
 अपने सफर में बढ़ रहे है  
 अपने आप में बुलंद हुए है

देखो, अब सब सुधर गए हैं।

## २७. बेतुकी

हरकत में इस कदर नहीं आते  
 ऐसी बेतुकी बातें नहीं करते  
 सज्जन का स्वाभिमान और  
 झूठ की प्रतिष्ठा  
 ज्ञान का धन और  
 पैसों की पूँजी  
 एक दूसरे से नहीं तौलते।

हरकत में इस कदर नहीं आते  
 ऐसी बेतुकी बातें नहीं करते  
 प्रकृती का मेल और  
 कृत्रिमता का खेल  
 कार्य की सुंदरता और  
 दिखावे की खूबसूरती  
 एक-दूसरे से नहीं तौलते।

हरकत में इस कदर नहीं आते  
 ऐसी बेतुकी बातें नहीं करते  
 त्यागी का एकांतवास और  
 भोगी की कीर्ती  
 शहिदों की शहादत और  
 दुर्जनों की मौत  
 एक-दूसरे से नहीं तौलते।

हरकत में इस कदर नहीं आते  
 ऐसी बेतुकी बातें नहीं करते  
 देशभक्तों की कंगालता और  
 रास्ते के भिखारी  
 दानी की दानत और  
 लुटेरों की रहम  
 एक-दूसरे से नहीं तौलते।

हरकत में इस कदर नहीं आते  
 ऐसी बेतुकी बातें नहीं करते  
 नेक की सादगी और  
 लफंगो की शान  
 स्वावलंबन की दिनचर्या और  
 मनमौजी का दिखावा  
 एक-दूसरे से नहीं तौलते।

हरकत में इस कदर नहीं आते  
 ऐसी बेतुकी बातें नहीं करते  
 पतित की पावनता और  
 मतलब की सुरक्षितता  
 कर्म की श्रेष्ठता और  
 जन्म की ज्येष्ठता  
 एक-दूसरे से नहीं तौलते।

हरकत में इस कदर नहीं आते

ऐसी बेतुकी बातें नहीं करते  
 आप की कमाई और  
 बाप का वरदान  
 पसिनों की खुशबू और  
 अत्तर की सुगंध  
 एक-दूसरे से नहीं तौलते।

हरकत में इस कदर नहीं आते  
 ऐसी बेतुकी बातें नहीं करते  
 मौन के धरता और  
 आत्मस्तुती के भोक्ता  
 ऊसुलों के रखवाले और  
 इमानों के दलाल  
 एक-दूसरे से नहीं तौलते।

हरकत में इस कदर नहीं आते  
 ऐसी बेतुकी बातें नहीं करते

## २८. एक वह.....

एक वह खुदनसीब है  
 जो ममता पाता है।  
 एक वह धनवान है  
 जो प्यार कमाता है।  
 एक वह खूबसूरत है  
 जो दिलसे सुंदर है।  
 एक वह समझदार है  
 जो सच पहचानता है।  
 एक वह असरदार है  
 जो कारगर होता है।  
 एक वह सँभलता है  
 जो हौसला रखता है।  
 एक वह भटकता है  
 जो सबक भूलता है।  
 एक वह पहुँचता है  
 जो दिशा सँभालता है।  
 एक वह बनता है  
 जो जोड़ते चलता है।  
 एक वह रोता है  
 जो अपना खोता है।  
 एक वह सोता है  
 जो शांती कमाता है।  
 एक वह जीता है

जो जिंदगी अपनाता है।  
 एक वह मरता है  
 जो उम्मीद हारता है।

## २९. बात बनाओ

बात बनाओ; जीवन सजाओ।  
 सपनों की  
 हकीकत से  
 उड़ानों की  
 जमीन से

बात बनाओ; जीवन सजाओ।  
 दर्द की  
 दवा से  
 भूख की  
 खाने से

बात बनाओ; जीवन सजाओ।  
 दिल की  
 प्यार से  
 धन की  
 सुकून से

बात बनाओ; जीवन सजाओ।  
 ज्ञान की  
 सेवा से  
 समय की  
 अवसर से

बात बनाओ; जीवन सजाओ  
 हालात की  
 संयम से  
 सोच की  
 होश से

बात बनाओ; जीवन सजाओ  
 कथनी की  
 करनी से  
 हसरतों की  
 हौसले से

बात बनाओ; जीवन सजाओ  
 कमाई की  
 मेहनत से  
 खुदाई की  
 इन्सान से

बात बनाओ; जीवन सजाओ।  
 तबीयत की  
 प्रकृती से  
 अतीत की  
 वक्त से

बात बनाओ; जीवन सजाओ।

## ३०. विषम

प्यार बढ़ाते  
नफरत ना सँभालो।  
साथ देते  
धोखा ना करो।  
मिठे बोलते  
बात ना बिघाड़ो।  
पास लेते  
ठोकर ना मारो।  
मदद करते  
बोझ ना बढ़ाओ।  
बिनती करते  
सख्ती ना बरतो।  
न्याय करते  
विपरीत ना सोचो।  
इलाज करते  
दर्द ना बढ़ाओ।  
खाना खाते  
पेट ना बिघाड़ो  
जिद करते  
बनती ना बिघाड़ो।  
आसान करते  
मुश्किलें ना बढ़ाओ।  
कुछ पाते  
खुद को ना लूटाओ।

## ३१. परिवर्तन

यह कोई चमत्कार नहीं,  
कड़ी मेहनत का नतीजा है।  
यह कोई उपहार नहीं,  
वक्त का सही चयन है।  
यह कोई प्रचार नहीं,  
कार्य का किर्ती स्तंभ है।  
यह कोई प्रसार नहीं,  
त्याग का प्रवर्तन है।  
यह कोई मनोरथ नहीं,  
सच का अपनाना है।  
यह कोई पुराण नहीं,  
अतीत का इतिहास है।  
यह कोई अचंबा नहीं,  
काल का ही संदेश है।  
यह कोई मेहरबानी नहीं,  
एक यहीं विकल्प है।  
यह कोई उपदेश नहीं,  
एक अनमोल सिद्धांत है।  
यह कोई बदलाव नहीं,  
अभूतपूर्व परिवर्तन है।

## ३२. मुस्कुरा दो

सिर्फ एक बार तुम मुस्कुरा दो।  
 सब कड़वाहट मिट जाएगी  
 सब दुरियाँ घट जाएगी  
 जो भी मुरझा खिल जाएगा  
 जो भी उलझा सुलझ जाएगा  
 सिर्फ एक बार तुम मुस्कुरा दो।  
 एक पल हम जीत जायेंगे  
 जमाने को तो भूल जायेंगे  
 खुद को हम धन्य मानेंगे  
 बड़ी कामयाबी हासिल पायेंगे  
 सिर्फ एक बार तुम मुस्कुरा दो।  
 एक ऊर्जा मिल जाएगी  
 अमानत वह हमारी बनेगी  
 पतीत से पावन हो जायेंगे  
 धरती पर स्वर्ग पा लेंगे  
 सिर्फ एक बार तुम मुस्कुरा दो।  
 बहुत कुछ तुम कह जाओगे  
 सब कुछ हम समझ लेंगे  
 एक बात भी बन जाएगी  
 जिंदगी तो सँवर जाएगी  
 लेकिन, सिर्फ एक बार तुम मुस्कुरा दो।

## ३३. वीरत्व

हौसलों को  
 बुलंद रखना  
 कामयाबी को  
 जपते रहना  
 यह वीरत्व के लक्षण हैं।

दुर्बल को  
 सहारा देना  
 दर्द को  
 समझ लेना  
 यह वीरत्व के लक्षण हैं।

बेबस को  
 मदद करना  
 गलती को  
 क्षमा करना  
 यह वीरत्व के लक्षण हैं।

बिघड़ी को  
 बना देना  
 बनी को  
 सम्मान देना

यह वीरत्व के लक्षण हैं।

कहर को  
सह लेना  
जहर को  
मिटा देना  
यह वीरत्व के लक्षण हैं।

स्वभाव को  
विनम्र रखना  
न्याय को  
स्थापित करना  
यह वीरत्व के लक्षण हैं।

तूफान को  
मोड़ देना  
कशती को  
किनारे लाना  
यह वीरत्व के लक्षण हैं।

हारे को  
हाथ देना  
थके को  
साथ देना

यह वीरत्व के लक्षण हैं।

दर्द को  
मिटा देना  
बोझ को  
घटा देना  
यह वीरत्व के लक्षण हैं।

गलती को  
सुधर लेना  
खुद को  
दुरुस्त करना  
यह वीरत्व के लक्षण हैं।

भूत को  
समझ लेना  
भविष्य को  
आकार देना  
यह वीरत्व के लक्षण हैं।

मोह को  
छोड़ देना  
त्याग को  
अपना लेना



यह वीरत्त्व के लक्षण हैं।

नये को  
 खोज लेना  
 राह को  
 दिखा देना  
 यह वीरत्त्व के लक्षण हैं।

## ३४. पूरी - खरी

वह बात अब नहीं  
 वह मधुर स्मरण रही  
 झूमना  
 गाना  
 कहना  
 सुनना  
 वह बात अब नहीं  
 वह मधुर स्मरण रही  
 साथ  
 बात  
 काम  
 धाम  
 वह बात अब नहीं  
 वह मधुर स्मरण रही  
 रुठना  
 मनाना  
 सजना  
 सँवरना  
 वह बात अब नहीं  
 वह मधुर स्मरण रही  
 खट्टा  
 मिठा  
 भूख  
 स्वाद

वह बात अब नहीं  
 वह मधुर स्मरण रही  
 तसल्ली  
 दिल्लगी  
 रंगीली  
 रसीली  
 वह बात अब नहीं  
 वह मधुर स्मरण रही  
 इंतजार  
 इनाम  
 पहेली  
 पेशकश  
 वह बात अब नहीं  
 वह मधुर स्मरण रही  
 बंदगी  
 जिंदगी  
 ऊसूल  
 रसूल  
 वह बात अब नहीं  
 वह मधुर स्मरण रही  
 हरी  
 भरी  
 पूरी  
 खरी  
 वह बात अब नहीं  
 वह मधुर स्मरण रही

## ३५. बदफैल

क्या से क्या बन गए।  
 आसमों से खाक हो गए  
 फूल से पत्थर बन गए  
 सनम से बेवफा हो गए  
 राजा से रंक बन गए  
  
 क्या से क्या बन गए।  
 इज्जत से बेइज्जत हो गए  
 अमीर से फकीर बन गए  
 बाअदब से बदफैल हो गए  
 देवता से दानव बन गए  
  
 क्या से क्या बन गए।  
 त्यागी से भोगी हो गए  
 सबल से दुर्बल बन गए  
 होश से बेहोश हो गए  
 ईन्सान से हैवान बन गए  
  
 क्या से क्या बन गए।

## ३६. पेड़

मैं तो एक पेड़ हूँ।  
 किसी नेक ने बोया मेरा बीज  
 फिर मेरा जीना शुरू हुआ  
 खूब मेहनत, लगनसे  
 उसने मुझे पाला-पोसा, बड़ा किया

लेकिन वह अब ना रहा-चला गया।  
 अब तो मुझपर आने लगे  
 फूलों और फलों की बहारे  
 छाया भी मेरी विशाल फैली  
 बड़ी मजबूती से मैं खड़ा हुआ

अब यहाँ हर कोई आने लगा।  
 कोई विराजे शितल-घने छाँव में  
 बच्चे -सच्चे खेल रहे दंग से  
 गपशप की आवाज भी गुँजने लगी  
 पशु-पंछी ने भी लिया यहाँ अल्पविराम

सब कुछ ठीक ही चल रहा था लेकिन -  
 कुछ लोगों ने की बड़ी गड़बड़  
 वे तो तोड़ने लगे कच्ची कलियाँ

फिर कैसे लगे घोंसले फल के  
 डालियाँ भी काँटने लगे कोई

अब तो मुझे अनर्थ सा महसूस हुआ।  
 मुझे निर्बल कर दिया लोगों ने  
 फिर रोगोंने मुझे त्रस्त किया  
 तब तो मैं जर्जर दिखने लगा  
 अब तो होने लगी मुझे काटने की बात

अगर मैं कटा, जरा सोचो क्या क्या छुटेगा?

## ३७. मना

यहाँ सब कुछ मना है।  
 चुप्पी मना है  
 कथनी मना है  
 पढ़ना मना है  
 लिखना मना है

यहाँ सब कुछ मना है।  
 हँसना मना है  
 रोना मना है  
 सुनना मना है  
 दिखाना मना है

यहाँ सब कुछ मना है।  
 बिमारी मना है  
 दवा मना है  
 चिंता मना है  
 आराम मना है

यहाँ सब कुछ मना है।  
 प्यार मना है  
 नफरत मना है  
 भूख मना है

प्यास मना है

यहाँ सब कुछ मना है।  
 बढ़ना मना है  
 रुकना मना है  
 खोना मना है  
 पाना मना है

यहाँ सब कुछ मना है।  
 अच्छा मना है  
 बुरा मना है  
 जीना मना है  
 मरना मना है

यहाँ सब कुछ मना है।

## ३८. बचाते चलो

वक्त को बचाते चलो।  
 काम को निभाते चलो।  
 सब्र को सँभालते चलो।  
 आनंद को फैलाते चलो।  
 हालात को समझते चलो।  
 जवानी में होश से चलो।  
 बुढ़ापे में सँभलकर चलो।  
 शांती को बनाए चलो।  
 सेवा को बढ़ाते चलो।  
 त्याग को अपनाते चलो।  
 संकट में धीरज से चलो।  
 बचत की आदत से चलो।  
 बातों के मिठास से चलो।  
 जिंदगी में विश्वास से चलो।  
 सफाई के नियम से चलो।  
 सुंदरता के शौक से चलो।  
 सच्चाई के मार्ग से चलो।

## ३९. नाक्राबिल

तुने कर तो दिखाया  
 लेकिन, हम समझ ना पाए।  
 तुने कह तो दिया  
 लेकिन, हम सुन ना सके।  
 तुने प्रदान तो किया  
 लेकिन, हम मोल ना पहचाने।  
 तुने राह तो दिखाई।  
 लेकिन, हम चाल ना चले।  
 तुने संदेश तो दिया  
 लेकिन, हम जान न पाए।  
 तुने आसमाँ तो दिखाया  
 लेकिन, हमने उड़ान ना भरी।  
 तुने हौसला तो दिया  
 लेकिन, हमने उम्मीद ना बाँधी।  
 तुने सपना तो दिखाया  
 लेकिन, हमने संकोच ना छोड़ा।  
 तुने नींव तो डाल दी  
 लेकिन, हमने कद ना बढ़ाया।  
 तुने सफाई तो कर दी  
 लेकिन, हमने साफ ना रखा।  
 तुने सम्मान तो दिया  
 लेकिन, हमने इज्जत ना बचाई।  
 तुने सँभल तो दिया

लेकिन, हम चल ना पाए।  
 तुने गुहार तो लगाई  
 लेकिन, हम जाग ना पाए।  
 तुने मिला तो दिया  
 लेकिन हम जुट ना पाए।  
 तुने पढा तो दिया  
 लेकिन, हमने सबक ना लिया।  
 तुने साथ तो लिया  
 लेकिन, हमने कदम ना बढ़ाया।  
 तुने सब तो दिया  
 लेकिन, हम औकात पर अड़े।

## ४०. अलग

अलग जगह  
 भिन्न रास्ते  
 अलग काम  
 भिन्न तरिकें  
 अलग कल्पना  
 भिन्न सपने  
 अलग रस्में  
 भिन्न कस्मे  
 अलग तकदीर  
 भिन्न तस्वीर  
 अलग नायक  
 भिन्न नीति  
 अलग कानून  
 भिन्न न्याय  
 अलग समय  
 भिन्न पहचान  
 अलग मिसाल  
 भिन्न वचन  
 अलग किताब  
 भिन्न विचार  
 अलग अंदाज़  
 भिन्न निर्माण  
 अलग दर्द

भिन्न दवा  
अलग जहाँ  
भिन्न आसमाँ

## ४१. महावीर

यह बात और है की; हार हुई या जीत! लेकिन -  
छिन्न-विछिन्न शक्ती तुने जुटाई  
टूटी-फुटी सामग्री तुने मिलाई  
भुले-बिसड़े लोग तुने ढुँढ लिए  
गिरे-पड़े हौसले तुने बुलंद किए  
घिसे-पिटे रास्ते तुने छोड़ दिए  
लूटे-उजड़े हालात तुने थाम लिए  
रूठे-सूखें वक्त को तुने मना लिया  
थके-हारे वर्तमान को तुने उम्मीदे दिए  
डूबते - मिटते जिंदगी तुने उभार दिए  
बची-कुची इज्जत तुने सँभल लिए  
हाल-बदहाल प्रसंग तुने निभा दिए  
गले-निगले शान तुने उठा दिए  
चक्र-व्यूह को तुने तोड़ दिए  
बहे-गए को तुने हाथ दिए  
दुःख-दर्द को तुने पी लिए  
निराशा-हताशा को तुने जीत लिए  
शर-पंजर को तुने तेज दिए  
लहू-लुहान अतीत को तुने सँवर दिए  
भूख-प्यास में समृद्धी के सपने दिए  
तूही सच्चे नायक हो,  
इन्सान नहीं फरिश्ते हो।  
तुम हारे नहीं जीते हो; तुम तो महावीर हो।

## ४२. सलाम

सलाम होते हैं झुकाने के लिए  
झुकने की विनम्रता अक्सर कहाँ?  
लूटती और हासिल करती दुनिया को  
लूटा देने की आदत अक्सर कहाँ?

दौलत के रहते और  
मजबूरी के चलते  
शोहरत के रहते और  
इस्तेमाल के चलते

सलाम होते हैं झुकाने के लिए  
झुकने की विनम्रता अक्सर कहाँ?  
लूटती और हासिल करती दुनिया को  
लूटा देने की आदत अक्सर कहाँ?

लापरवाही के रहते और  
खामियों के चलते  
कुर्सियों के रहते और  
सत्ता के चलते

सलाम होते हैं झुकाने के लिए

झुकने की विनम्रता अक्सर कहाँ?  
लूटती और हासिल करती दुनिया को  
लूटा देने की आदत अक्सर कहाँ?

उम्र के रहते और  
बेहोशी के चलते  
सबलता के रहते और  
दुर्बलता के चलते

सलाम होते हैं झुकाने के लिए  
झुकने की विनम्रता अक्सर कहाँ?  
लूटती और हासिल करती दुनिया को  
लूटा देने की आदत अक्सर कहाँ?

बगावत के रहते और  
दरिंदगी के चलते  
पागलपन के रहते और  
बेवफाई के चलते

सलाम होते हैं झुकाने के लिए  
झुकने की विनम्रता अक्सर कहाँ?  
लूटती और हासिल करती दुनिया को  
लूटा देने की आदत अक्सर कहाँ?



## ४३. तड़प

हम भी तो इन्सान है;  
हमारा भी एक आसमाँ है।

हमे भी अपनी बात है  
हमारी अपनी जुबान है  
हमारी भी कोई आवाज है  
हमे भी कुछ सुनाना है

हम भी तो इन्सान है,  
हमारा भी एक आसमाँ है।

हमे भी एक सीना है  
हमारा दिल भी धड़कता है  
हमारी भी कोई चाहत है  
हमे भी कुछ खिलना है

हम भी तो इन्सान है,  
हमारा भी एक आसमाँ है।

हमे भी हाथ की लकीरे हैं  
हमारी आँखे भी तरसती हैं

हमारे भी कोई अरमान हैं  
हमे भी कुछ जीना है

हम भी तो इन्सान है,  
हमारा भी एक आसमाँ है।

हमे भी अपनी दुनिया है  
हमारे भी सूरज-चाँद है  
हमारे भी अपने सपने हैं  
हमें भी खिलकर जीना है

हम भी तो इन्सान है,  
हमारा भी एक आसमाँ है।

## ४४. नाकाम

आसमाँ के खवाँब देखते,  
खाक में मिल गए।  
चोटी की उँचाई छूते,  
खाई में गिर पड़े।  
जन्नत के सपने देखते,  
जहन्नम को सर ढोए।  
मंज़िल को पाते हुए,  
रास्ते ही गुम हुए।  
सूरज को छूते हुए,  
राख बनकर गिर गए।  
सर उठाकर चलते हुए,  
ठोकर से चोटील हुए।  
जग को बहलाते हुए,  
खुद ही बहकर चल दिए।  
हँसाने के कौशिश में,  
स्वयं ही रो पड़े।  
दुसरोँ को उठाते हुए,  
खुद ही फिसल गए।  
सबक सिखाते हुए,  
खुद सबक सिंख गए।  
शिकार की मुहिम पर,  
खुद शिकार हो गए।  
कामयाबी की मंज़िल पर,  
कहीं के ना रह गए।

## ४५. दुर्बलता

कहाँ से आए इतना कुछ?  
तन-मन अर्पण करना  
सब कुछ लुटा देना  
विपत्ती को अपना लेना

कहाँ से आए इतना कुछ?  
सब सच स्विकार करना  
दृष्टि निर्दोष कर लेना  
दुःखी से हमदर्द होना

कहाँ से आए इतना कुछ?  
निजी स्वार्थ का त्याग करना  
अपनी भुलोंपर गौर फर्माना  
अपने आपको दुरुस्त करना

कहाँ से आए इतना कुछ?  
हिरे और काँच का फर्क जानना  
दूध और पानी में भेद करना  
दिल खोलकर क्षमा माँगना

कहाँ से आए इतना कुछ?  
वक्त का मोल समझ लेना  
कर्म का महिमा जान जाना  
त्याग का वस्त्र अपना लेना

कहाँ से आए इतना कुछ?

## ४६. अनमेल

कहाँ मेल होता है?

खाने का भूख से  
वेतन का काम से  
नम्रता का विद्वत्ता से  
नाम का कर्म से

कहाँ मेल होता है?

लागत का दाम से  
रास्तों का यातायात से  
प्रशंसा का हकीकत से  
कथनी का करनी से

कहाँ मेल होता है?

धर्म का आचरण से  
कानून का अमल से  
धन का नेकी से  
चने का दाँत से

कहाँ मेल होता है?

नेता का सेवा से  
किसान का मुनाफे से  
मजदूरी का समय से

खूबसूरती का ज्ञान से

कहाँ मेल होता है?

बालों का उम्र से  
अनुमान का निष्पत्ती से  
इस्तेमाल का जरूरत से  
मालिक का नौकर से

कहाँ मेल होता है?

प्रज्ञा का सुविधा से  
दवा का सेहत से  
आबादी का संवाद से  
इन्सान का इन्सानियत से

## ४७. आम लोग

यह बात तो सच है की.....  
 हमारी कोई औकात नहीं,  
 हमें कोई इज्जत नहीं  
 फिर भी हम कुछ सँभल रहे है।

यह बात तो सच है की.....  
 हमारी कोई कीमत नहीं,  
 हमे कोई पूछता नहीं  
 फिर भी हम कुछ जी रह है।

यह बात तो सच है की.....  
 हमारी कोई पात्रता नहीं,  
 हमे कोई समझ नहीं  
 फिर भी हम कुछ जान रहे है।

यह बात तो सच है की.....  
 हमारी कोई पहचान नहीं,  
 हमें वह दृष्टी नहीं  
 फिर भी हम कुछ देख रहे हैं।

यह बात तो सच है की.....  
 हमारी कोई हैसियत नहीं,  
 हमें वह काबिलीयत नहीं  
 फिर भी हम कुछ कर रहे है।

यह बात तो सच है की.....  
 हमारी कोई बात नहीं,  
 हमें वह जुबान नहीं  
 फिर भी हम कुछ कह रहे है।

## ४८. अनोखा मेल

विरोध में अनोखा मेल है।  
 धन का ऋण से  
 दिन का रात से  
 श्वास का उच्छ्वास से  
 आसमाँ का मिट्टी से

विरोध में अनोखा मेल है।  
 सागर का जमीन से  
 फूल का काँटो से  
 किचड़ का कमल से  
 हिरे का मिट्टी से

विरोध में अनोखा मेल है।  
 ज्वार का भाटे से  
 दक्षिण का उत्तर से  
 क्रिया का प्रतिक्रिया से  
 सुख का दुःख से

विरोध में अनोखा मेल है।  
 धूप का छाँव से  
 भरे का रिते से  
 वाणी का मौन से  
 नींद का कार्य से

विरोध में अनोखा मेल है।  
 बचपन का बुढ़ापे से  
 त्याग का पाने से  
 जन्म का मृत्यु से  
 शून्य का पूर्णता से

विरोध में अनोखा मेल है।

## ४९. अभी

कहीं वक्त छूट ना जाए।  
 अभी फुलो-फलो;  
 खूब खेलो-कुदो

कहीं वक्त छूट ना जाए।  
 अभी पढ़ो-लिखो;  
 खूब ज्ञान-समझ पाओ

कहीं वक्त छूट ना जाए।  
 अभी सोच-विचार करो;  
 खूब सच्चे-अच्छे बनो

कहीं वक्त छूट ना जाए।  
 अभी मिल-जुल लो;  
 खूब घूँल-मिल लो

कहीं वक्त छूट ना जाए।  
 अभी नया-अलग खोजो;  
 खूब अपनी पहचान बनाओ

कहीं वक्त छूट ना जाए।

अभी मौका-चुनौती पाओ;  
खूब खुद को प्रस्तुत करो

कहीं वक्त छूट ना जाए।  
अभी बिघड़ी-सुधार लो;  
खूब ज़िंदगी सँवर लो

कहीं वक्त छूट ना जाए।  
अभी गीत-गुण गाओ;  
खूब तल्लीन हो जाओ

कहीं वक्त छूट ना जाए।  
अभी आनंद-रसपान करो;  
खूब मजा तुम चख लो

कहीं वक्त छूट ना जाए।  
अभी वक्त-समय पर रहो;  
खूब पल हासिल करो

कहीं वक्त छूट ना जाए।  
अभी जो करना-कर लो;  
खूब ढंग से जी लो

कहीं वक्त छूट ना जाए।

## ५०. तकदीर

तकदीर यूँ बनती है; दास्ताँ एक सुनाती है।  
फटे-टुटे जोड़कर  
उजड़े-बिखरे लेकर  
क्षण-क्षण मिलाकर  
पाई-पाई कमाकर

तकदीर यूँ बनती है; दास्ताँ एक सुनाती है।  
दर-दर ठोकर खाकर  
खून-पसिना एक कर  
तिल-तिल तड़फ कर  
मर-मर के जी कर

तकदीर यूँ बनती है; दास्ताँ एक सुनाती है।  
हाथा-पाई हो कर  
कण-कण बचा कर  
उम्र-असर त्यागकर  
माया-मोह छोड़कर

तकदीर यूँ बनती है; दास्ताँ एक सुनाती है।  
रुखा-सुखा खा कर  
भला-बुरा सुन कर  
क्रोध-गुस्सा पी कर  
भूत-भविष्य खोज कर

तकदीर यूँ बनती है; दास्ताँ एक सुनाती है।

## ५१. क्या - क्या

क्या सहना - क्या भुगतना  
 सब मजबूरी को सह लिया  
 क्या त्यागना - क्या छोड़ना  
 सब स्वार्थ का त्याग किया  
 क्या देखना - क्या रोकना  
 सब बुराई जान लिया  
 क्या करना - क्या देना  
 सब दाँवपर लगा दिया  
 क्या कहना - क्या सुनना  
 सब भूलकर खामोश हुआ  
 क्या होना - क्या रहना  
 सबका आमना - सामना हुआ  
 क्या पाना - क्या छोड़ना  
 सब खाली कर दिया  
 क्या जमीन - क्या आसमाँ  
 सब सच्चाई जान गए  
 क्या सम्मान - क्या अपमान  
 सब तिखे तीर झेल लिए  
 क्या गम - क्या सिकवा  
 सब तोलकर हम खड़े हुए

## ५२. माहौल

अब तो माहौल बदल रहा है.....  
 मुरझे से चेहरे खिल रहे हैं  
 बातों से बातें बन रही हैं  
 सूर से सूर मिल रहे हैं

अब तो माहौल बदल रहा है.....  
 हाथ से हाथ मिल रहे हैं  
 मुस्कान से मुस्कान फैल रही हैं  
 आँसू पे आँसू बह रहे हैं

अब तो माहौल बदल रहा है.....  
 हँसी से खुशी हो रही है  
 आराम से विराम बन रहा है  
 सलाम को सलाम मिल रहा है

अब तो माहौल बदल रहा है.....  
 मेल से मेल खा रहे हैं  
 दिल से दिल मिल रहे हैं  
 मन से मिलाप हो रहे हैं

अब तो माहौल बदल रहा है.....

## ५३. कृतघ्न

अब तो जान बच ली,  
जिंदगी तो अब बख्श दी....  
अब तू मेरा साथी नहीं  
अब तू मेरा सारथी नहीं  
अब तो जान बच ली,  
जिंदगी तो अब बख्श दी....  
अब तू मेरा फरिश्ता नहीं  
अब तू मेरा करिश्मा नहीं  
अब तो जान बच ली,  
जिंदगी तो अब बख्श दी....  
अब तू मेरा सपना नहीं  
अब तू मेरा अपना नहीं  
अब तो जान बच ली,  
जिंदगी तो अब बख्श दी....  
अब तू मेरा गीत नहीं  
अब तू मेरा संगीत नहीं  
अब तो जान बच ली,  
जिंदगी तो अब बख्श दी....  
अब तू मेरा राही नहीं  
अब तू मेरा कोई नहीं  
अब तो जान बच ली,  
जिंदगी तो अब बख्श दी....

## ५४. ना हजम

कुछ बातें हजम तो नहीं होती,  
लेकिन करनी तो पड़ती हैं।  
कुछ लम्हें जीए तो नहीं जातें,  
लेकिन भुगतने तो पड़ते हैं।  
कुछ रिश्ते बर्दाश्त तो नहीं होते,  
लेकिन सँभलने तो पड़ते हैं।  
कुछ हकीकतें बयान तो नहीं होते,  
लेकिन छिपाने तो पड़ती हैं।  
कुछ जख्मे-निशाण तो नहीं होते,  
लेकिन सहने तो पड़ते हैं।  
कुछ परेशानियाँ हल तो नहीं होती,  
लेकिन ढुँढने तो पड़ती हैं।  
कुछ मन्त्रों पूरी तो नहीं होती,  
लेकिन माँगनी तो पड़ती हैं।



कुछ अरमान सच तो नहीं होते,  
लेकिन सजाने तो पड़ते हैं।

कुछ हल मिल तो नहीं जाते,  
लेकिन मिलाने तो पड़ते हैं।

कुछ अर्थ समझ तो नहीं आते,  
लेकिन समझने तो पड़ते हैं।

कुछ बेचैनियाँ सही तो नहीं जाती,  
लेकिन अपनानी तो पड़ते हैं।

कुछ आशाएँ प्रकट तो नहीं होती,  
लेकिन तलाशने तो पड़ती हैं।

## ५५. मेहनत

आखिर, मेहनत रंग लायी....  
आमना-सामना होता रहा  
हार-जीत होती रही

आखिर, मेहनत रंग लायी....  
फूल-पत्थर मिलते रहें  
निंदा-स्तुती पाते रहें

आखिर, मेहनत रंग लायी....  
मिलते-बिछड़ते सिलसिले रहें  
साथ-धोखा देखते रहें

आखिर, मेहनत रंग लायी....  
मिठी-कड़वी बातें रही  
चाही-अनचाही करनी रही

आखिर, मेहनत रंग लायी....  
बने-बिघड़े पाते रहें  
फूटे-टूटे देखते रहें

आखिर, मेहनत रंग लायी....  
आँधी-तुफान सहते रहें  
मरते-मिटते खड़े रहें

आखिर, मेहनत रंग लायी....

## ५६. जुदाई

वक्त अब आ गया

आप से जुदा होने का

जुदाई का यह पल

पलक झपकते निकल जाएगा

फिर यह अपना लंबा साथ

अपने हाथ से छूट जाएगा

यह एक कड़ी है जो

तोड़ देगी भूत और भविष्य को

यह एक परिवर्तन बदल देगा

हमारे-तुम्हारे वर्तमान को

हम चले जाएँगे अगले मुकामपर

अब तो हम बेगाने हुए

अब तक जिससे अभिन्न थे

उससे लो अब भिन्न हुए

मुबारक हो तुम्हे हमारी बातें

हम भी सँभालेंगे तुम्हारी मिठी यादें

मुड़कर अगर देखोगे पिछे

आपके ही नजर के दिवाने पाओगे

आँखों में जब आँसू भरेंगे

तुम भी उसमें दिखाई दोगे

हमारा सफर अब पूरा हुआ

ईश्वर का मीठा वह प्रसाद रहा

शुभकामनाओं के साथ तुम्हे बधाई

मीठी ही रहे सदा हमारी जुदाई

### सचिन शरद कुसनाळे एम. ए. (समाजशास्त्र), डी. एड.

जन्मतिथि : ११/५/१९७४

स्थायी पता : गाँव म्हैसाळ, पिनकोड नं. ४१६ ४०९,

तहसिल-मिरज, जिला - सांगली (महाराष्ट्र)

भ्रमणधनी : ०९४२११०५०४८, ०९८८१८४६३२९

Email : sachinkusnale1008@gmail.com



#### नौकरी -

प्राथमिक अध्यापक (सन १९९७ से सेवारत)

सांप्रत-जिला परिषद पाठशाला, गणेशवाडी, तहसिल - शिरोळ, जिला - कोल्हापुर

#### लेखनकार्य -

'कोहिनूर' और 'नक्षत्र' इन प्रातिनिधिक काव्यसंग्रहोंमें कविताएँ प्रकाशित।

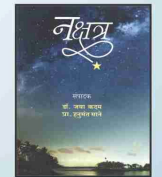
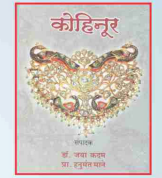
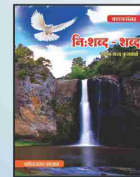
विविध पत्र-पत्रिकाएँ, दिपावली अंक तथा समाचार पत्रों में कविताएँ और लेख प्रकाशित।

#### पुरस्कार -

आयडॉल पुरस्कार (युवा प्रकाशन समूह, वर्धा की ओर से सन २०१५)

#### प्रकाशित साहित्यकृती -

काव्यसंग्रह: निःशब्द - शब्द, कवितासागर प्रकाशन, जयसिंगपुर



#### काव्यसंग्रह: निराकार - साकार

#### सचिन शरद कुसनाळे

स्वागत मूल्य: १००/-

#### कवितासागर प्रकाशन, जयसिंगपुर

०२३२२-२२५५००, ९९७५८७३५६९

KavitaSagarpublication@gmail.com

